CHETANA
International Journal of Education (CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)
Impact Factor
SJIF 2025-8.445

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

पर्यावरण की आर्थिक धारणाओं के प्रति उत्पादकों की जागरूकता : वर्तमान की महती आवश्यकता

फूल चन्द महोलिया
शोधार्थी
डॉ. स्वाति बत्रा
शोध निर्देशक
अर्थशास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर
Email-pcmaholia@gmail.com, Mobile-9413644681

First draft received: 05.11.2025, Reviewed: 09.11.2025
Final proof received: 09.11.2025, Accepted: 20.12.2025

सारांश

वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास वैश्विक विमर्श के केन्द्रीय मुद्दे बन चुके हैं। उत्पादन तंत्र पर बढते औद्योगिकरण, कृषि विस्तार, खनन, ऊर्जा उपभोग और कार्बन उत्सर्जन ने प्राकृतिक संसाधनों पर अत्यधिक दबाव डाला है। प्रस्तुत पत्र में विषय वस्तु विश्लेषण एवं सन्दर्भ अवलोकन विधि से यह जानने का प्रयास किया गया है कि मानव की आर्थिक क्रियाएँ विशेषकर उत्पादकीय क्रियाओं के चलते विकास के नाम पर जो पर्यावरणीय बिगाड व संकटों को जन्म मिल रहा है, इस लिहाज से पर्यावरण केन्द्रित आर्थिक धारणाओं के प्रति उत्पादकों की जागरूकता वर्तमान की एक महती आवश्यकता है। ऐसे में ''पर्यावरण की आर्थिक धारणाएँ'' यह प्रतिपादित करती हैं कि पर्यावरण केवल सामाजिक–नैतिक जिम्मेदारी नही है, बल्कि आर्थिक दृष्टि से भी एक महत्वपूर्ण पूँजी है। उत्पादकों के लिए वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए अब यह आवश्यक हो गया है कि वे संसाधनों के संरक्षण, प्रदूषण नियन्त्रण, नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग तथा हरित प्रौद्योगिकी अपनाने में सजग भूमिका निभाएँ। इस लिहाज से प्रस्तुत पत्र इस आवश्यकता को रेखांकित करता है कि उत्पादकों की पर्यावरणीय आर्थिक चेतना एक जरूरी उपागम है तथा इस मुद्दे पर उनकी जागरूकता पर्यावरण सरंक्षण का आवश्यक दृष्टिकोण है।

मुख्य शब्द: *पर्यावरण, आर्थिक धारणा, उत्पादकों की जागरूकता एवं वर्तमान की आवश्यकता आदि.*

घोषणा (Declaration)

मानवीय सभ्यता के विकास उत्पादन एक प्रमुख कारक रहा है, परन्तु अनियंत्रित उत्पादन और उपभोग ने आज अनेक पर्यावरणीय संकटों को जन्म दे दिया है, जिसके चलते वायु प्रदूषण, जल संकट, भू–क्षरण, जैव–विविधता की हानि और जल–वायु परिवर्तन जैसी अनेक चुनौतियां संसार के समक्ष उठ खड़ी हुई हैं। आज यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो चुका है कि जैव–मण्डल का शीर्षस्थ सदस्य मानव एवं विशिष्टतः उसकी आर्थिक क्रियाएँ चाहे वे व्यक्तिक (Micro) हो या समष्टि (Macro), ने पर्यावरण को कई तरह से प्रभावित कर अनेक पर्यावरण संकटों को जन्म दे दिया है। इस मुद्दे पर सम्पूर्ण विश्व समुदाय ने जून 1992 में ब्राजील में आयोजित 'पृथ्वी सम्मेलन' के अन्तर्गत आम सहमति प्रदान कर दी है कि ''मानव की आवश्यकता एवं विकास की प्रत्याशाओं के चलते उत्पादन, विनिमय, वितरण तथा उपभोग की सूक्ष्म एवं व्यापक क्रियाएँ वातावरण, मिट्टी, जल, समुद्र आदि की रसायनिक संरचना को बदल कर अनेक पर्यावरणीय संकटों को जन्म दे रही हैं।''[1] पर्यावरण की आर्थिक धारणा के पहलू का स्पष्ट तात्पर्य यह है कि आर्थिक क्रियाएँ एवं विकास ऐसा हो, जो आज की आवश्यकताओं को इस प्रकार पूरा करें कि बिना पर्यावरण को नुकसान पहुचाएँ भावी पीढ़ी के हित भी सुरक्षित रहें। इस लिहाज से उत्पादक पर्यावरण की आर्थिक धारणाओं को समझे और अपने उत्पादकीय कार्यों में पर्यावरणीय सन्तुलन को प्राथमिकता दे। इस सन्दर्भ मे ब्रुंटलैंड आयोग (1987) की यह संस्तुति समीचीन है– ''सतत विकास/ग्रीन इकॉनोमी एक ऐसी धारणा है, जो बिना पर्यावरण का बिगाड़ किये, भावी पीढ़ी के हितों की पूर्ति से कोई समझौता नहीं करती है।''[2] 21वीं सदी के इस आधुनिक युग में मानव की आवश्यकताओं का दायरा इतना बढ़ गया है कि उनकी पूर्ति की दृष्टि से यह धरा आज अपने–आप को असहाय महसूस कर रही है। बढ़ता भौतिकवाद, जनसंख्या एवं अविवेकशील आर्थिक विकास की अन्धी दौड़ में आज प्राकृतिक संसाधनों के दोहन में तेजी आयी है। इस कारण पर्यावरण के कुछ संघटकों में इतना अधिक परिवर्तन आया है कि उनकी क्षतिपूर्ति बिना भौतिक पर्यावरण के स्वतः नियामक क्रिया द्वारा सम्भव नहीं है। इस लिहाज से प्रत्येक उत्पादकों को अपनी जिम्मेदारी समझ कर चलना होगा तथा जागरूक होकर अपनी भूमिका निर्धारित करनी होगी। अब उत्पादकों को यह समझना होगा कि पर्यावरण का संरक्षण न केवल उनकी सामाजिक जिम्मेदारी है, बल्कि दीर्घकालिक आर्थिक हितों से जुड़ा हुआ मुद्दा भी है। इस मुद्दे पर महात्मा गाँधी ने कहा था कि उत्पादकों व उद्योगपतियों को यह समझना चाहिए कि वे समाज में अपना व्यवहार ट्रस्टी के रूप में प्रकट करें, न कि वैयक्तिक लालसा के रूप में। आगे बढ़ कर वे कहते हैं कि ''प्रकृति हर व्यक्ति की आवश्यकता पूरी करने के लिए पर्याप्त संसाधन देती है, परन्तु हर व्यक्ति के लालच के लिए नही।''[3]

उपर्युक्त पृष्ठभूमि के आधार पर हम यह कह सकते है कि यदि उत्पादक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग नही करेंगे, साथ ही उत्पादक जागरूकता के साथ अपनी जिम्मेदारी महसूस नही करेंगे तो आर्थिक प्रगति कभी भी पर्यावरणीय मित्र व टिकाऊ नहीं रहेगी। आज की पर्यावरणीय परिस्थितियों व संकटों को देखते हुए पर्यावरण की सच्ची आर्थिक धारणाओं के प्रति उत्पादकों को जागरूक करना वर्तमान की महती आवश्यकता है, इसमें कोई सन्देह नहीं।

शोध के उद्देश्य

1. पर्यावरण की आर्थिक धारणाओं की परिभाषा एवं महत्व स्पष्ट करना।
2. उत्पादकों की पर्यावरणीय चेतना के स्तर का सैद्धान्तिक विश्लेषण करना।
3. यह सिद्ध करना कि पर्यावरण संरक्षण उत्पादकों के आर्थिक लाभ से किस प्रकार जुड़ा हुआ है।
4. सतत विकास हेतु उत्पादकों की जागरूकता की आवश्यकता प्रतिपादित करना।

पर्यावरण की आर्थिक धारणाओं का विश्लेषण

पर्यावरण की आर्थिक धारणाओं का मतलब यह है कि– पर्यावरण और अर्थव्यवस्था के बीच के सम्बन्धों को समझना, जिसमे प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग व उनकी सुरक्षा का विचार भी शामिल है। पर्यावरण की आर्थिक धारणाएँ पर्यावरण के आर्थिक मूल्यों पर केन्द्रित हैं। इसलिए पर्यावरणीय अर्थशास्त्र का उदेश्य आर्थिक विकास को बढावा देने के साथ–साथ पर्यावरण की चिन्ता व सुरक्षा को भी सुनिश्चित करना है। पर्यावरण की आर्थिक धारणाओं से यह स्पष्ट है कि पर्यावरण एक आर्थिक सम्पत्ति है, सेवा मूल्य है, क्षरण की लागत तथा पर्यावरण सरक्षण के लिहाज से प्रोत्साहन भी है। अतः स्पष्ट है कि पर्यावरण की आर्थिक धारणाएँ, वह महत्वपूर्ण उपागम है, जिससे पर्यावरण सरंक्षण, आर्थिक विकास के साथ–साथ पर्यावरण व आर्थिक क्रियाओं मे सन्तुलन स्थापित करने का एक महत्वपूर्ण ढाँचा है।4

यह सत्य है कि मनुष्य की आर्थिक गतिविधियों ने पर्यावरण संकटों को चुनौतियाँ प्रदान की है, तो वहीं दूसरी ओर उसके उचित सुधार व प्रबन्धन की आवश्यकताओं को भी जन्म दे दिया है, अतः अर्थव्यवस्था एवं पर्यावरण के विशिष्ट नजरिये को देखकर सतत विकास (पारिस्थितिक अर्थव्यवस्था) एवं हरित अर्थव्यवस्था आर्थिक विकास का नया मॉडल बनकर उभरा है, जिसका उद्देश्य ऐसी अर्थव्यवस्था प्राप्त करना है, जो प्रकृति और पर्यावरण के साथ सामंजस्य के दृष्टिकोण को बढ़ावा दे। पर्यावरण की आर्थिक धारणाओं की यह मान्यता है कि पर्यावरण कोई मुफ्त संसाधन नही है, बल्कि एक आर्थिक पूँजी है। प्राकृतिक संसाधनो का क्षरण व गलत उपयोग सीधे–सीधे उत्पादन और उपभोग की क्षमताओं को प्रभावित करता है। वैसे भी यह स्पष्ट है कि प्रदूषण और संसाधन क्षरण की अप्रत्यक्ष लागत अन्ततः उत्पादकों और उपभोक्ताओं दोनों को ही वहन करनी पड़ती है। पर्यावरण उत्थान के लिहाज से हरित प्रौद्योगिकी, पुनर्चक्रण और नवीकरणीय ऊर्जा का प्रयोग न केवल पर्यावरण मित्र है, बल्कि दीर्घकालीन आर्थिक विकास का आधार भी है। इस लिहाज से हेर्मन डेली (1996) का यह कथन भी उल्लेखनीय है–''अर्थव्यवस्था पर्यावरण की एक उप–प्रणाली है, यदि पर्यावरण नष्ट हो जायेगा तो अर्थव्यवस्था भी टिक नही पायेगी।''5 साथ ही UNEP (2011) ने भी अपनी रिपोर्ट में कहा है– ''हरित अर्थव्यवस्था केवल पर्यावरण संरक्षण रणनीति नही, बल्कि यह दीर्घकालीक आर्थिक वृद्धि का सबसे सुरक्षित मार्ग है।''6 इस प्रकार पर्यावरण की आर्थिक धारणाएँ पर्यावरण व विकास की गतिविधियों का वह दृष्टिकोण है, जिसमें दोनों को एक दूसरे का पूरक माना गया है, न कि परस्पर प्रतिस्पर्धी। इस लिहाज से पर्यावरण की आर्थिक धारणाएँ हमे 'पर्यावरण–मैत्री विकास' तथा 'विकास–मैत्री पर्यावरण' को अपना आदर्श घोषित करती है।

उत्पादकों की पर्यावरणीय चेतन का स्तर व दृष्टिकोण

उत्पादकों की पर्यावरणीय चेतना अभी संक्रमण काल में है, जहाँ एक ओर पारम्परिक लाभ केन्द्रित दृष्टिकोण मौजूद है, वहीं दूसरी ओर नई पीढ़ी ग्रीन टेक्नोलॉजी व ग्रीन इकॉनोमी की राह पर अग्रसर है। आज आवश्यकता इस बात की है कि उत्पादकों की पर्यावरणीय चेतना केवल कानूनी बाध्यता या छवि निर्माण तक सीमित न रहकर आत्मबोध व स्वदायित्त्व का हिस्सा बने, तभी उत्पादन और पर्यावरण दोनों का संतुलित व सह–अस्तित्व सम्भव हो पायेगा। प्रदूषण, संसाधनों की अन्धाधुन्ध खपत, जलवायु परिवर्तन, जैव–विविधता का क्षरण और असन्तुलित विकास–ये सब संकेत करते हैं कि यदि उत्पादक वर्ग पर्यावरणीय चेतना नही अपनायेगा, तो आर्थिक प्रगति टिकाऊ नही रह सकेगी, अतः यह आवश्यक है कि उत्पादक केवल लाभ केन्द्रित न होकर पर्यावरणीय दृष्टिकोण को भी अपनी उत्पादन प्रक्रियाओं का मूल आधार बनाये।

जहां तक उत्पादकों की पर्यावरण चेतना के स्तर का सवाल है, तो परम्परागत किसान और ग्रामीण लघु उत्पादक व कुछ नयी पीढ़ी के उद्यमी आंशिक पर्यावरणीय चेतना रखे हुये दिखायी देते हैं, वहीं दूसरी ओर बड़े औद्योगिक उत्पादक आज भी अधिकतम उत्पादन और अधिकतम लाभ को प्राथमिकता देते है, न कि पर्यावरण के हितों की सुरक्षा को। इस दिशा में विश्व बैंक की रिपोर्ट (2023) भी स्पष्ट करती है कि ''विकासशील देशों में 60 फीसदी उद्योग केवल कानूनी दबाव के कारण प्रदूषण नियंत्रण के कागजी उपाय अपनाते है।''7 परम्परागत किसान व लघु उत्पादक अपेक्षाकृत प्रकृति से जुड़े होते हैं, इस लिहाज से इनके उत्पादन में पर्यावरणीय हानि अपेक्षाकृत कम होती है, किन्तु आधुनिक तकनीकों और रसायनों के अत्यधिक प्रयोग से यहाँ भी प्रदूषण और असन्तुलन बढ़ गया है। मसलन कृषि व कृषिजन्य उद्योगों में अति उत्पादकता व लाभ के लालच में रसायनों का भारी मात्रा में प्रयोग हो रहा है।

पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक लाभ एक दूसरे के पूरक हैं

आज के दौर में यह मानना कि पर्यावरण संरक्षण केवल खर्च का विषय है, यह एक भ्रान्ति है। वास्तविकता यह है कि स्वच्छ जल, शुद्ध वायु, उर्वर भूमि और जैव–विविधता ही आर्थिक विकास की आधारशीला है। यदि इन्हें सुरक्षित रखा जाए तो दीर्घकालीन आर्थिक लाभ स्वतः सुनिश्चित होते हैं। इसका मतलब यह है कि उत्पादन/उद्योग और पर्यावरण का तालमेल (सतत विकास) औद्योगिक प्रगति और पर्यावरण संरक्षण दोनों के विकास का आधार है। नवीकरणीय ऊर्जा (सौर, पवन, जल), प्रदूषण नियन्त्रण तकनीकें, अपशिष्ट प्रबन्धन और हरित उद्योग न केवल प्रदूषण घटाते हैं, बल्कि ऊर्जा खर्च को भी कम करते हैं, जो कि सीधा–सीधा लाभकारी सौदा है। मसलन जैविक खेती, इको पर्यटन, वृक्षारोपण, नवीकरणीय ऊर्जा आदि से उत्पादनीय लागतें एवं सामाजिक लागतें कम होती है, जिसके चलते आर्थिक लाभ और पर्यावरणीय हितों दोनों को बल मिलता है। यही कारण है कि आज हरित अर्थव्यवस्था को भविष्य की अर्थव्यवस्था माना जा रहा है, अतः हम कह सकते हैं कि पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक लाभ प्रतिस्पर्धी नहीं हैं, बल्कि एक दूसरे के पूरक और अनिवार्य सहयोगी हैं। हरित तकनीक से उत्पादन की दीर्घकालीन लागतें घटती हैं। प्रदूषण कम होने से स्वास्थ्य पर होने वाला खर्चा भी घटता है। साथ ही, पर्यावरण अनुकूल उत्पादन से ब्राण्ड वैल्यू और उपभोक्ता का विश्वास भी बढ़ता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि उत्पादकों की पर्यावरणीय चेतना और आर्थिक लाभ एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। इस सम्बन्ध में जॉन एल्किंगटन (1997) ने 'ट्रिपल बॉटन लाइन' की अवधारणा दी और कहा कि– ''किसी भी व्यवसाय की सफलता केवल लाभ पर आधारित नहीं हो सकती, उसे लोगों और धरती दोनों के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए।''8 इस सम्बन्ध में भारतीय पर्यावरण मंत्रालय की पर्यावरण स्थिति रिपोर्ट 2020 का निचोड़ वाक्य भी समीचीन है– ''भारत की आर्थिक प्रगति तभी स्थायी रह सकती है, जब पर्यावरणीय संसाधनों का उपयोग विवेकपूर्ण और सन्तुलित ढंग से किया जाये।''9 इस प्रकार यह सार्वजनिक प्रकटीकरण हैं कि आर्थिक प्रगति और पर्यावरण संरक्षण परस्पर पूरक व सन्तुलनीय उपागम है, उक्त आदर्श प्रास्थितियों पर ही वर्तमान और भविष्य का सबसे सुरक्षित मार्ग है, इसमें कोई संदेह नही।

पर्यावरण की आर्थिक धारणाओं के प्रति उत्पादकों की भूमिका और जागरूकता

मानव सभ्यता के विकास के साथ–साथ उत्पादन की प्रक्रिया ने प्राकृतिक संसाधनों पर गहरा दबाव डाला है। आज उत्पादन केवल मुनाफा कमाने का जरिया नहीं है, बल्कि पर्यावरण सन्तुलन बनाये रखने की जिम्मेदारी भी है। आर्थिक दृष्टि से पर्यावरण संरक्षण और सतत उत्पादन एक दूसरे के पूरक हैं। उत्पादक यदि पर्यावरण की आर्थिक धारणाओं को समझ कर कार्य करें, तो न केवल संसाधनो का संरक्षण सम्भव है, बल्कि दीर्घकालीक आर्थिक लाभ/प्रगति भी सुनिश्चित हो सकती है। पर्यावरण की आर्थिक धारणाएँ यह स्पष्ट करती हैं कि प्राकृतिक संसाधन सीमित हैं और उनका विवेकपूर्ण उपयोग ही सतत विकास का आधार है। प्रदूषण की लागत अन्ततः समाज और अर्थव्यवस्था दोनों को वहन करती पड़ती है। इस लिहाज से ग्रीन इकॉनोमी से रोजगार, उत्पादन और लाभ सहित सब कुछ तो सम्भव है। अतः उत्पादको को अपनी पर्यावरणीय सेवाओं का आर्थिक मूल्य समझते हुए अपनी भूमिका निम्न क्षेत्रों में सक्रिय रूप से निभानी हैः–

- **सतत उत्पादन तकनीक का प्रयोग**– ऊर्जा दक्ष मशीनें, नवीकरणीय ऊर्जा स्त्रोत और कम अपशिष्ट उत्पादन की रणनीति अपनाना।
- **पर्यावरण हितैषी कच्चे माल का प्रयोग** – जैसे जैविक खाद, पुनर्चक्रण योग्य वस्तुएँ।
- **अपशिष्ट प्रबंधन** 'Reduce, Reuse, Recycle'– सिद्धान्त को व्यवहार में लाना।
- **कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व** (CSR) – वृक्षारोपण, जल संरक्षण व प्रदूषण नियन्त्रण हेतु निवेश।
- **लंबी अवधि की दृष्टि** – अल्पकालिक लाभ के बजाय दीर्घकालीक पर्यावरणीय सुरक्षा को आधार बनाना।

जहाँ तक उत्पादकों की इस दिशा में जागरूकता का सवाल है तो हम कह सकते हैं कि उत्पादकों की जागरूकता केवल पर्यावरणीय दायित्व नहीं है, बल्कि एक प्रकार से यह एक आर्थिक अनिवार्यता भी है। जागरूक उत्पादक ही संसाधनों के सन्तुलित उपयोग, प्रदूषण नियन्त्रण और सतत विकास की दिशा में समाज को आगे बढ़ा सकते हैं। अतः उत्पादन और पर्यावरण को परस्पर लाभार्थ एक साथ लेकर चलना आज के युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है। कहने का मतलब यह है कि आर्थिक गतिविधियों के चलते वर्तमान में उभरे पर्यावरणीय संकटों के निदान हेतु उत्पादकों की जागरूकता एक बहुत ही जरूरी उपागम है। वर्तमान में उत्पादकों को पर्यावरण प्रबन्धन तंत्र, पर्यावरण प्रबन्धन मानक (150 14001), कार्बन क्रेडिट ट्रेडिंग, जैविक उत्पादों व हरित विपणन जैसी धारणाओं के प्रति संवदेनशील व जागरूक होना होगा, तब जाकर कहीं पर्यावरण–मित्र अर्थव्यवस्था का मार्ग प्रशस्त होगा।

निष्कर्ष

पर्यावरण और अर्थव्यवस्था का सम्बन्ध आज केवल सैद्धान्तिक नहीं, बल्कि व्यवहारिक सत्य बन चुका है। प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ते दबाव, जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण की समस्या यह स्पष्ट करती है कि यदि उत्पादन प्रक्रियाएँ पर्यावरण अनुकूल नहीं होगी तो आर्थिक प्रगति अस्थायी, टूटी–टूटी

(खण्डित) और विनाशकारी सिद्ध होगी। पर्यावरण की आर्थिक धारणाएँ यह सिखाती हैं कि जल, वायु, मिट्टी और जैव–विविधता भी उतने ही महत्वपूर्ण संसाधन है, जितने कि खनिज और ऊर्जा स्रोत। इनका क्षरण उत्पादन की लागत को बढ़ाता है, जबकि संरक्षण से दीर्घकालीक लाभ प्राप्त होते हैं। मसलन जैविक खेती से मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है और उत्पाद उच्चे दाम पर बिकते हैं, वहीं हरित ऊर्जा अपनाने से ऊर्जा लागत घटती है और प्रदूषण भी कम होता है। उत्पादकों की जागरूकता इस दिशा की सबसे बड़ी आशा है। यदि वे सतत उत्पादन तकनीक, पुनर्चक्रण, अपशिष्ट प्रबन्धन व पर्यावरण–हितैषी नीतियाँ अपनाये तो यह न केवल पर्यावरण सन्तुलन को सुरक्षित करेगा, बल्कि प्रतिस्पर्धात्मक बाजार में उनकी आर्थिक स्थिति को भी सुदृढ़ बनायेगा। अतः निष्कर्ष यह है कि–पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक समृद्धि विरोधी नहीं, बल्कि परस्पर पूरक हैं। आज की महती आवश्यकता यही है कि उत्पादक अपनी भूमिका को समझे और सतत विकास दिशा में अपनी जागरूकता को कर्म में बदले। यही आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित और समृद्ध भविष्य की की गारन्टी है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. लोढ़ा, डॉ. जितेन्द्र कुमार, ''आर्थिक क्रियाओं का पर्यावरण तथा जैव विविधता पर प्रभाव एवं विद्यालयों की भूमिका'' भारतीय आधुनिक शिक्षा, एनसीईआरटी, नई दिल्ली, वर्ष–24, अंक–1, जूलाई 2005. पृ.सं. 61–62.
2. ब्रुंटलैंड आयोग (1987), ''अवर कॉमन फ्यूचर'', ऑक्सफोर्ड यूनिर्वसिटी प्रेस, https://pwonlyias.com से उद्धृत किया गया।
3. लोढ़ा डॉ. जितेन्द्र कुमार, ''गाँधी विचार में पर्यावरण व उसकी प्रासंगिकता'', गाँधी विचार का आज, ग्रन्थ विकास, राजापार्क जयपुर, 2019, पृ.सं. 122.
4. CPCB Annual Report 2022-23, Ministry of Environment, Forest and Climate Change, Delhi, रिलीज डेट 27.09.2024, Update 20.05.2025, https://cpcb.nic.in. से उद्धृत।
5. Daly, H.E., & Farley, J. (2004). Ecological Economics : principles and Applications, Island press.
6. United Nations Environment Programme (UNEP), (2011). Towards a Green Economy : Pathways to Sustainable Development and Poverty Eradication. UNEP Report.
7- विश्व बैंक रिपोर्ट, (2023½] https://www.pib.gov.in. ls m)`rA
8- Elkington, J. (1997). Cannibals with Forks : The Triple Bottom Line of 21st Century Business, https://books.google.com. ls m)`rA
9. पर्यावरण स्थिति रिपोर्ट–2020, भारतीय पर्यावरण मंत्रालय, नई दिल्ली, ीजजचेरूध्ूण्उवमेण्हवअण्पदण से उद्धृत।